International Journal of Applied Research 2018; 4(1): 521-523

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 521-523
www.allresearchjournal.com
Received: 16-11-2017
Accepted: 28-12-2017

रश्मि कुमारी
व्याख्याता, इतिहास विभाग,
विशेश्वर दयाल महिला कॉलेज,
छपरा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
रश्मि कुमारी
व्याख्याता, इतिहास विभाग,
विशेश्वर दयाल महिला कॉलेज,
छपरा, बिहार, भारत

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में गरमपंथी विचारधाराओं की भूमिका

रश्मि कुमारी

सारांशः
देशप्रेम और राष्ट्रीयता के विकास की दृष्टि से 19वीं सदी का काल महत्वपूर्ण मानी जाती है। इस समय देश के विभिन्न भागों में कई समाज सुधार आन्दोलनों का जन्म हुआ और राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। जिसने भारत के विभिन्न भागों में राष्ट्रीय चेतना पैदा करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसे ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिए एक अभयदीप अर्थात् सुरक्षा नली का नाम दिया गया। 1885 से लेकर 1905ई. तक इस संस्था पर नरमपंथियों का प्रभाव रहा, जो बंगाल विभाज के बाद गरमपंथी विचारधारा के प्रभाव में आ गई। प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में गरमपंथी विचारधाराओं की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तावनाः
गरमपंथी विचारधारा का उद्भवः चूंकि 1885ई. से 1905ई. तक भारत तथा विदेशों में कुछ ऐसी घटनाएं घटित हुई जिससे भारतीय समाज के युवा वर्ग में कांग्रेस के संवैधानिक साधनों के प्रयोग की नीति में अविश्वास ने जन्म ले लिया। इस युवा वर्ग का मानना था कि स्वराज्य कोई भीख की वस्तु नहीं है। इसके लिए कठोर संघर्ष की नीति अपनाने की आवश्यकता है। इसके लिए उग्र राष्ट्रवादियों ने आत्म–बलिदान का आहवान किया। इस समय भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में लाल–बाल–पाल की विचारधारा का जन्म हुआ। इस विचारधारा के प्रमुख नेता लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक तथा विपिनचन्द्र पाल थे। इस समय तिलक ने कहा कि स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर ही रहूंगा। इसका भारतीय युवा वर्ग पर अत्याधिक प्रभाव पड़ा और स्वराज्य प्राप्ति के लिए कठोर संघर्ष की बात ने एक नई विचारधारा को जन्म दिया। अंततः 1906 से 1919ई. तक भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की बागडोर गरमपंथी विचारधारा वाले नेताओं के हाथ में रही।

इन विचारधारा का उद्भव कोई आकस्मिक घटना नहीं थी, बल्कि बीस वर्षों तक कांग्रेस की नीतियों का परिणाम थी। कांग्रेस के नरमपंथी नेताओं द्वारा अंग्रेजों की न्यायप्रियता और क्रमिक सुधारों की बात ने युवा वर्ग को यह बात सोचने पर विवश कर दिया कि ब्रिटिश सरकार द्वारा निरन्तर भारतीय हितों की जो अनदेखी की गई, उसमें नरमपंथी नेताओं का भी योगदान रहा। जब 1892ई. में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय परिषद अधिनियम पास किया तो इससे कांग्रेस के युवा नेता संतुष्ट नहीं थे। अब युवा वर्ग को यह विश्वास हो गया था कि प्रार्थना पत्र देने से और प्रतिनिधि मण्डल भेजकर काग्रेस को कुछ हासिल होने वाला नहीं था। लाला लाजपतराय ने तो यहां तक कहा कि अब भारतीयों को ब्रिटिश सरकार की कृपा पर निर्भर न रहकर कुछ निर्णायक कदम उठाने चाहिए।

ब्रिटिश सरकार की नीतियां आर्थिक दृष्टि से भी भारतीय उद्योगों को बर्बाद करने वाली थी। दादा भाई नैरोजी के 'आर्थिक निष्कासन के सिद्धान्त' ने स्पष्ट कर दिया कि ब्रिटिश सरकार व्यापार के द्वारा भारतीयों का आर्थिक शोषण कर रही थी और प्रत्येक वर्ष अपार धनराशि ब्रिटेन जा रही थी। ब्रिटिश सरकार ने भारत में निर्मित सामान पर अधिक उत्पादन कर लगाकर भारतीय वस्तुओं को महंगा कर दिया और विदेशी वस्तुएं भारत में सस्ते दामों पर मिलने लग गई। इससे भारत में बेरोजगारी बढी और कई उद्योग तो बर्बादी के कगार पर पहुंच गए। यह बात गरमपंथी विचारधारा वाले युवा वर्ग में असंतोष पैदा होने का कारण बनी।

19वीं सदी में भारत में कई समाज सुधार आन्दोलनों का जन्म हुआ और इससे भारतीय पुनर्जागरण में मदद मिली। इन समाज सुधार आन्दोलनों द्वारा भारतीय सभ्यता और संस्कृति के गौरवपूर्ण अतीत का आभास करवाया गया और भारत के समाज सुधारकों ने राष्ट्रीय चेतना पैदा करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अरविन्द घोष ने आध्यात्मिक राष्ट्रवाद तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वराज्य शब्द का प्रयोग करके भारतीयों में नया जोश भर दिया। बाल गंगाधर तिलक ने गणपति तथा शिवाजी उत्सवों का प्रारम्भ करके भारतीयों को गौरवशाली अतीत से परिचय करवाया।

इस समय भारत में बंकिमचन्द्र चटर्जी की पुस्तक 'आनन्दमठ' का युवा वर्ग पर काफी प्रभाव पड़ा और उनके द्वारा रचित प्रमुख गीत 'वन्देमातरम्' राष्ट्रीय गान बन गया। केसरी, युगान्तर तथा सन्ध्या

जैसे प्रमुख समाचारपत्रों ने ब्रिटिश सरकार की साम्राज्यवादी नीतियों तथा अमानुशिक अत्याचारों की कठोर आलोचना की। इससे भारतीय जनमानस में देशप्रेम की भावना पैदा हुई जो कांग्रेस की उदारवादी विचारधारा की आलोचना का कारण भी बनी। इस समय भारत में 1896–97ई. का भीषण अकाल पड़ा तो ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों की मदद करने की बजाय दिल्ली में एक शानदार दरबार का आयोजन किया। पूना में जब भयंकर प्लेग फैला तो ब्रिटिश सरकार ने इस स्थिति को अविवेकपूर्ण ढंग से हल करने का प्रयास किया।7 इससे भारतीयों में सरकार विरोधी भावनाऐं पैदा हुई और उग्र राष्ट्रवाद का विकास हुआ। इस समय ब्रिटिश उपनिवेशों में रहने वाले भारतीयों के प्रति ब्रिटिश लोगों का व्यवहार बहुत ही असभ्य और अन्यायपूर्ण था। दक्षिण अफ्रीका में रह रहे भारतीयों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था और उन्हें प्रथम श्रेणी के डिब्बों में सफर करने की अनुमति नहीं थी। इससे शिक्षित भारतीय युवा वर्ग में ब्रिटिश सरकार के प्रति असंतोष की भावना पैदा की और गरमपंथी विचारधारा को बल मिला।

विश्व पटल पर कई ऐसी घटनाएं हुई जिनसे भारत के युवा वर्ग को यह अनुभव हुआ कि देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना बहुत जरूरी है। 1904–05ई. में जापान ने रूस को हराकर यह संदेश दिया कि अपने देश की स्वतंत्रता के लिए प्रयास करना कोई गुनाह नहीं है और इसमें कुछ भी असंभव भी नहीं है।8 अब भारत का युवा वर्ग समझ गया कि अंग्रेज जाति अपराजेय नहीं है। इस समय लाल–बाल–पाल की विचारधारा ने भारत के युवा वर्ग में नये विचार और शक्ति का संचय करके राष्ट्रीय आन्दोलन को नई दिशा दी। जब भारत के युवा वर्ग ने पाश्चात्य क्रांतिकारियों मेजिनी, बर्क, गैरीबाल्डी तथा वांशिगटन के स्वतन्त्रता सम्बन्धी विचारों का अध्ययन किया तो वे उग्र राष्ट्रवाद की दिशा में आगे बढे।

1905ई. में बंगाल विभाजन की घटना ने युवा वर्ग को यह सोचने पर विवश किया कि अब ब्रिटिश सरकार के साथ निर्णायक लड़ाई का दौर शुरू करना आवश्यक हो गया है। देश के विभिन्न भागों में लार्ड कर्जन की बंग–भंग की नीति की कठोर आलोचना की गई और इसे भारतीय राष्ट्रवाद को कमजोर करने की दिशा में एक षड़यंत्र माना गया। अब भारत में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया गया तथा देश के कई भागों में हिंसा व आतंक का दौर शुरू हो गया। युवा वर्ग में कांग्रेस के संवैधानिक मार्ग की नीति के प्रति अविश्वास का जन्म हुआ और भारत में उग्र राष्ट्रवाद के उद्भव की नींव तैयार हो गई।

गरमपंथि विचाराधारा की कार्यप्रणालीः बंगाल विभाजन के बाद कांग्रेस में जो नई विचारधारा पैदा हुई वह उदारवादियो के बिल्कुल विपरीत थी। यह विचारधारा अंग्रेजों की न्यायप्रियता की घोर विरोधी थी। इस विचारधारा के नेताओं का मानना था कि संवैधानिक मार्ग द्वारा भारत के राजनैतिक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। इस विचारधारा के नेताओं ने पूर्ण स्वराज्य की मांग करके नरमपंथियों को चौंका दिया और हिंसा व आतंक की नीति द्वारा स्वराज्य प्राप्ति की बात कही। इस विचारधारा के समर्थक नेता स्वराज्य के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ब्रिटिश सरकार की नौकरियों, उपाधियों तथा ब्रिटिश समान के बहिष्कार के समर्थक थे। उन्होंने विदेशी वस्तुओं, संस्थाओं तथा मूल्यों को छोड़कर उनके स्थान पर भारतीय वस्तुओं, मूल्यों और संस्थाओं को अपनाने पर बल दिया। इसके साथ–साथ निष्क्रिय प्रतिरोध का मार्ग भी गरमपंथियों द्वारा अपनाया गया। इन नेताओं ने विदेशी शिक्षा प्रणाली का बहिष्कार करके राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था अपनाने पर जोर दिया ताकि भारतीय छात्रों को भारतीय सभ्यता, संस्कृति व परम्पराओं से अवगत करवाया जा सके। इस समय तिलक ने 'दक्षिण शिक्षा समाज' की स्थापना की तथा मदनमोहन मालवीय ने 'हिन्दू विश्वविद्यालय' की स्थापना करके राष्ट्रीय शिक्षा की नीति पर चलने का व्यवहारिक मार्ग प्रशस्त किया। इस तरह गरमपंथियों की कार्य पद्धति नरमपंथियों से बिल्कुल विपरीत थी।

जब गरमपंथी विचारधारा की लोकप्रियता बढ़ने लगी तो ब्रिटिश सरकार ने यह बात सोची की यदि इसको न दबाया गया तो आने वाले समय में भारत पर शासन करना ब्रिटिश सरकार के लिए असंभव हो जायेगा। इसलिए ब्रिटिश सरकार ने दमन की नीति का सहारा लिया तथा गरमपंथी नेताओं पर अत्याचार करने शुरू कर दिये। 1908ई. में लाला लाजपत राय और सरदार अजीत सिंह को बिना मुकद्मा चलाये बर्मा की माण्डले जेल में भेज दिया गया। इसी तरह बाल गंगाधर तिलक को 'केसरी' समाचार पत्र में प्रकाशित लेखों के कारण छः वर्ष की सजा दी। इसके साथ–साथ ब्रिटिश सरकार ने 1910ई. में प्रेस एक्ट लागू करके समाचारपत्रों को प्रतिबन्धित कर दिया तथा कई भारतीय समाचार पत्रों के संपादकों को जेलों में डाल दिया। 1911ई में 'षडयंत्रकारी सभा अधिनियम' लागू करके भारतीयों द्वारा सार्वजनिक सभा बुलाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। फिर भी ब्रिटिश सरकार गरमपंथी विचारधारा को आगे बढने से नहीं रोक पाई और अंततः 1919ई में संवैधानिक सुधारों की दृष्टि से 'भारत सरकार अधिनियम' पास कर दिया।

लाला लाजपतराय, बालगंगाधर तिलक तथा विपिनचन्द्र पाल ने किया। लाला लाजपत राय का सम्बन्ध पंजाब से था और वे प्रमुख देशभक्त थे। जब 1905ई. में लार्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन किया तो कांग्रेस ने उनको भारतीय लोगों की समस्याओं को ब्रिटिश सरकार के सामने प्रस्तुत करने के लिए भेजा। उनका ब्रिटिश न्यायप्रियता में कोई विश्वास नहीं था और वे राष्ट्रीय शिक्षा, स्वदेशी, बहिष्कार और निष्क्रिय प्रतिरोध के प्रबल समर्थक थे। 1907ई में पंजाब सरकार ने उनको 'पंजाबी असंतोष' का जन्मदाता मानकर जेल में डाल दिया। उन्होंने 'यंग इंडिया' नामक पुस्तक लिखी और आगे चलकर साईमन कमीशन का विरोध किया। उनके राष्ट्रीय आन्दोलन के विकास में योगदान को आज भी हर भारतीय याद करता है।

इन विचारधारा के विकास में बाल गंगाधर तिलक को अग्रदूत माना जाता है। इनका सम्बन्ध महाराष्ट्र से था और वे भारतीय संस्कृति पर गर्व करते थे तथा ब्रिटिश शासन को भारतीयों के लिए अभिशाप मानते थे। उन्होंने 1893ई में 'गणपति उत्सव' तथा 1895ई. में 'शिवाजी उत्सव' प्रारम्भ करके महाराष्ट्रवासियों में नया जोश पैदा किया। इसके अतिरिक्त भारतीय जनता ने चेतना पैदा करने के लिए 'केसरी' एवं 'मराठा' समाचार पत्र भी प्रकाशित किये। उनका सम्पूर्ण जीवन मातृभूमि की सेवा में अर्पित रहा। उन्होंने भारतवासियों को यह नारा दिया– ''स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर ही रहूंगा।'' जब पूना में प्लेग फैला तो उन्होंने लोगों की तन–मन–धन से सेवा की तथा ब्रिटिश सरकार की अन्यायपूर्ण नीतियों की आलोचना की। सन् 1908 में उन पर राजद्रोह का मुकद्मा भी चलाया गया तथा बर्मा की माण्डले जेल में भेज दिया गया। यहां उन्होंने 'गीता रहस्य' पुस्तक लिखी। 1914ई में जेल से रिहा होते ही वे पुनः भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय हो गये। इस तरह उन्होंने भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना पैदा करने की दिशा में अहम् भूमिका अदा की।

गरमपंथी विचारधारा के तीसरे प्रमुख नेता विपिनचन्द्र पाल थे। इनका सम्बन्ध असम के सिलहट जिले से था। वे 1887ई में कांग्रेस में शामिल हुए और वर्ष 1901 में 'न्यू इंडिया' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया। जब 1905 में बंगाल का विभाजन हुआ तो उन्होंने ब्रिटिश सरकार की कठोर आलोचना की तथा स्वराज्य और स्वदेशी का उद्घोष करके भारतीयों में चेतना पैदा करने का कार्य किया।

गरमपंथियों की देनः इस विचारधारा ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को नई दिशा दी तथा हताश भारतीयों को यह अहसास करवाया कि अंग्रेज जाति अपराजेय नहीं है। इन्होंने कांग्रेस के नरमपंथी

नेताओं की कार्यपद्धति की आलोचना करके यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि भारत में संवैधानिक सुधारों के लिए त्याग व बलिदान की आवश्यकता है और इसके लिए संघर्ष का मार्ग ही उचित मार्ग है। इस विचारधारा के नेताओं ने 'स्वराज्य तथा स्वदेशी' जैसे शब्दों का प्रयोग करके भारतीयों में नया जोश पैदा किया। इनकी बहिष्कार तथा निष्क्रिय प्रतिरोध की नीति ने भारतीय युवा वर्ग को काफी प्रभावित किया। इससे भारतीय लोगों में नई राजनीतिक चेतना का संचार हुआ और यह विचारधारा जनवादी विचारधारा बन गई। तिलक के समाचार पत्र 'केसरी' का भारतीय लोगों पर काफी प्रभाव पड़ा। इस विचारधारा के नेताओं द्वारा अपनाई गई बहिष्कार की नीति तथा स्वदेशी आन्दोलन काफी सफल रहे। अंततः ब्रिटिश सरकार को झुकने पर विवश होना पड़ा और इन नेताओं द्वारा अपनाये गए साधनों को महात्मा गांधी ने भी अपने आन्दोलन का हथियार बनाया।

निष्कर्षतः गरमपंथी विचारधारा ने भारतीय राष्ट्रवाद को काफी प्रभावित किया और भारतीय पुनर्जागरण में इस विचारधारा की महत्वपूर्ण भूमिका रही। परन्तु यह आन्दोलन भी उदारवादियों की तरह धर्म निरपेक्ष नहीं रह सका और ब्रिटिश सरकार ने अपनी फूट डालो व राज करो की नीति के तहत इस आन्दोलन को भी खण्डित करने का प्रयास किया। मुस्लिम लीग का जन्म इसी नीति का परिणाम था जो आगे चलकर भारतीयों में साम्प्रदायिकता का जहर घोलने में सफल रही तथा अंततः भारत का विभाजन हो गया। फिर भी गरमपंथी विचारधारा का जो उद्घोष राष्ट्रीय आन्दोलन में हुआ, वह आगे चलकर भारत के राष्ट्रवादी नेताओं में नया जोश पैदा करने तथा राष्ट्रीय आन्दोलन को सही दिशा देने में सफल रही।

सन्दर्भ सूची

1. ए.आर.देसाई, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, समाजशास्त्र विभाग, बम्बई विश्वविद्यालय, 1954.
2. ताराचन्द, भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली, 1982.
3. धनपति पाण्डेय, आधुनिक भारत का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, पटना, 1995.
4. आचार्य बिमला, भारतीय पुनर्जागरण के सामाजिक प्रभाव, पचौरी प्रकाशन, दिल्ली, 1997.
5. बिजेन्द्रपाल सिंह, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1998.
6. उर्मिला शर्मा एवं एस.के.शर्मा, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, एटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1999.
7. दीनानाथ वर्मा, भारत में उपनिवेशवाद एवं राष्ट्रवाद, ज्ञानंदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000.
8. अयोध्या सिंह, हिन्दुस्तान का स्वाधीनता आन्दोलन, ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली, 2001.
9. आर.सी.वरमानी, कॉलोनाईजेशन एण्ड नेशनलिज्म इन इंडिया, गीतांजली पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2001.
10. एम.एल.धवन, भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन एवं स्वतन्त्रता संघर्ष, भाग 1एवं 2, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2008.
11. आर.के.परूथी, (सम्पादित), आधुनिक भारतः 1858–1905ई, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2009.